"बिहारी की काव्यकला"

बिहारी रीतिकाल के श्रेष्ठ प्रतिनिधि कवि हैं। ये जयपुर नरेश महाराज जय सिंह के दरबार के दरबारी कवि थे। महाराज जय सिंह की इन पर हमेशा कृपा दृष्टि बनी रहती थी। बिहारी प्रतिदिन नये दोहे बनाकर महाराज जय सिंह को सुनाया करते थे जिसे सुनकर राजा इनके प्रत्येक दोहे पर पुरस्कार स्वरूप एक अशर्फी देते थे। बिहारी ने कुल 700 के लगभग दोहों की रचना की है, जो 'बिहारी सतसई' के नाम से ख्यात है। बिहारी ने दोहा जैसे छोटे छन्द में भावों का इतना अधिक समावेश कर दिया है कि उनके सम्बन्ध में यह कहना पड़ता है कि, "बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है।" बिहारी का अभिव्यक्ति कौशल सशक्त है। वे जानते थे कि सभा-समाजों के लिए दोहा ही उपयुक्त छन्द है, जिसमें थोड़े से शब्दों में भी अपनी काव्य प्रतिभा दिखाई जा सकती है। बिहारी की काव्य दृष्टि का परिचय उनके काव्य में भाव पक्ष एवं कला पक्ष का समन्वय है। बिहारी की काव्यगत विशेषताओं को निम्नलिखित रूप में दर्शाया जा सकता है —

शृंगार रस की प्रधानता —

रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी शृंगार रस के सिद्ध कवि हैं और उनकी रचना सतसई शृंगार रस से ओत-प्रोत काव्य रचना। शृंगार रस बिहारी के काव्य का केन्द्र-बिन्दु है। बिहारी ने शृंगार के दोनों रूपों – संयोग शृंगार एवं

वियोग श्रृंगार' का अपने काव्य में विस्तृत वर्णन किया है। नायिका के सौन्दर्य चित्रण के साथ-साथ बिहारी ने नायक-नायिका के प्रेम क्रीड़ाओं, चेष्टाओं, हाव-भाव का विशद चित्रण आदि भी अपने काव्य में चित्रित किया है। नायक-नायिका के बीच परस्पर प्रेम क्रीड़ाओं का वर्णन बिहारी ने इस दोहे में की है

"छिनकु उघारति, छिनु छुवत, राखति छिनकु छिपाइ।
सबु दिनु पिय-खंडित अधर दरपन देखत जाइ॥"

रात को चुम्बन के समय नायक के द्वारा नायिका के अधर पर दिए गए दन्तक्षत को वह नायिका सारे दिन दर्पण में देखती रहती है। राधा-कृष्ण की चेष्टाओं, विनोद एवं उनके बीच चलने वाले परिहास का सुन्दर चित्रण बिहारी ने अपने इस दोहा में किया है - "बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं भौंहनु हँसैं दैन कहैं नहि जाय॥"

प्रकृति चित्रण —

बिहारी ने अपने काव्य में प्रकृति का चित्रण उद्दीपन एवं आलम्बन दोनों रूपों में किया है, जिससे प्रकृति का साकार चित्र उभर कर सामने आता है। बसंत ऋतु का यह वर्णन देखते ही बनता है, जिसमें आम के बौरों की सुगन्ध से तृप्त तथा माधुरी लता के पुष्पों की मधुर सुगन्ध से सने हुए एवं मकरन्द पान करने के कारण उन्मत्त भौंरों का झुण्ड स्थान-स्थान पर झूमते हुए दिखाई पड़ता है —

"छकि रसाल-सौरभ सने मधुर माधवी-गन्ध।
ठौर-ठौर झौंरत झँपत, भौंर-भौंर मधु अन्ध॥"

ऐसे ही ग्रीष्म ऋतु का यह वर्णन देखने लायक है
"कहलाने एकत बसत अहि, मयूर, मृग बाघ।
जगत तपोवन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ॥"
अर्थात् गर्मी की प्रचण्डता से व्याकुल होकर सर्प, मोर, हिरन और बाघ एक ही स्थान पर बैठे हैं। लगता है इस भयंकर ग्रीष्म ऋतु ने संसार को तपोवन के समान राग-द्वेष से रहित कर दिया है। बिहारी ने इसी प्रकार वर्षा ऋतु का भी बड़ा ही मनमोहक चित्रण किया है, जिसमें वर्षाकालीन घटाओं का वर्णन करते हुए वे कहते हैं——
"पावस-घन अँधियार महँ, रह्यो भेद नहिं आन।
राति-द्यौस जान्यो परत, लखि चकई-चकवान॥"
वर्षा काल के घने बादलों के अँधेरे के कारण पृथ्वी पर रात और दिन में कोई अन्तर नहीं रह रहा है। केवल रात-दिन का भेद केवल चकई-चकवा पक्षी को लक्षित करके ही जान पड़ता है।

भक्ति एवं नीति निरूपण——

बिहारी ने जहाँ एक ओर शृंगार का वर्णन अपने काव्य में किया है, वहीं दूसरी ओर भक्ति एवं नीति सम्बन्धी कुछ रचनाएँ भी की हैं। भक्ति एवं नीति सम्बन्धी दोहों में बिहारी का मन उतना नहीं रमा है जितना शृंगार सम्बन्धी दोहों में। भक्ति एवं नीति सम्बन्धी दोहे केवल परम्परा का पालन करने के लिए लिखे गए हैं। भक्ति सम्बन्धी दोहों में बिहारी ने संसार के मिथ्यात्व का प्रतिपादन करते हुए जगत को कच्चे काँच के समान असत्य कहा है, जिसके प्रत्येक

पदार्थ में उसी एक अनन्त रूप की आभा प्रतिबिम्बित होती हुई दिखाई दे रही है —

"मैं समुझ्यों निरधार, यह जगु काँचो काँच सौ।
एकै रूप अपार, प्रतिबिम्बित लखियतु जहँ॥"

प्रायः यह देखा जाता है कि सभी वेद-शास्त्रों का अध्ययन कर लेने के बाद भी मनुष्य भवसागर से पार नहीं हो पाता है, जबकि मुक्त पुरुषों का सत्संग करने पर वह भवसागर से पार हो जाता है। इसी आशय को बिहारी के इस दोहे में देखा जा सकता है-

"अजौं तरौना ही रह्यौ श्रुति सेवत इक रंग।
नाक-बास बेसरि लह्यौ, बसि मुकुतन के संग॥"

अर्थात् रात-दिन कानों (श्रुति) का समीप लाभ करते हुए भी तरौना (कान का आभूषण) नामक आभूषण अभी तक तरौना (भवसागर से तरा नहीं) ही रहा जबकि बेसरि (नाक का आभूषण) ने मोतियों (मुक्त पुरुषों) का सत्संग करके नाक (स्वर्ग) का स्थान प्राप्त कर लिया है।

बिहारी ने भक्ति परक दोहों के साथ ही साथ नीतिपरक दोहे भी लिखे हैं। स्वर्ण या धन की निंदा करते हुए वे लिखते हैं —

"कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय॥"

अर्थात् धतूरे से स्वर्ण या धन में सौ गुनी मादकता होती है, क्योंकि धतूरे के खाने से ही व्यक्ति बौराया करता है, परन्तु स्वर्ण या धन के तो पाने से ही व्यक्ति बौराने लगता है अथवा पागलों की तरह चेष्टा करने लगता है। बिहारी के दोहे अनुभूति के अक्षत भण्डार हैं तथा इनमें लोक एवं शास्त्र

का समन्वित रूप देखने को मिलता है।

व्यंजना सौन्दर्य — बिहारी के दोहों में अन्योक्ति एवं व्यंजना शक्ति का सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। उदाहरण स्वरूप इस दोहा को देखा जा सकता है, जिसमें सामान्य अर्थ तो भौंरे और कली से है, किन्तु व्यंग्यार्थ राजा जयसिंह से सम्बन्धित है —

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बिंध्यौं, आगे कौन हवाल॥"

इस दोहा में बिहारी राजा जयसिंह पर व्यंग्यार्थ किया है। राजा जयसिंह अपनी नवयौवना रानी में रात-दिन अनुरक्त रहा करते थे तथा राज-काज नहीं देख पाते थे। तब बिहारी ने यह दोहा भेजा और कहा कि न तो ~~वह~~ अभी इसमें पराग है, न मधुर मधु है और न अभी पूर्ण विकास हुआ है। हे भ्रमर! तू अभी इस कली से ही बिंधा हुआ है, तो आगे चलकर तेरी क्या दशा होगी? जिसका अभिप्राय यह था कि अभी तो इस नवयौवना रानी में न तो जवानी की रंगत है, न सरसता ही है और न इसके अंग-प्रत्यंगों का पूर्ण विकास हुआ है। हे राजन! यदि ऐसी मुग्धा नायिका में अपना सब कर्तव्य छोड़कर तुम दिन-रात लवलीन रहते हो, तो आगे चलकर जब यह पूर्ण युवती होगी, तब तुम्हारा क्या हाल होगा? इस प्रकार बिहारी ने अपनी व्यंजना सौन्दर्य के द्वारा जीवन सुधार का संदेश दिया है तथा अपने काव्य-कौशल को प्रकट किया है।

कल्पना शक्ति — बिहारी के काव्य का मूल

आधार उनकी कल्पना शक्ति है। दूर की सूक्ष्म वस्तु को भी कल्पना के बल पर अपने काव्य में साकार करने की यह शक्ति विरले कवियों में दिखाई पड़ती है। इस कल्पना शक्ति के कारण ही बिहारी के काव्य में सरसता, मधुरता एवं चमत्कार आ गया है। युवावस्था और नदी में समानता खोजकर बिहारी ने उसे एक ही दोहा में समाविष्ट कर दिया है —

"इक भीजैं चहलैं परैं बूड़ै बहैं हजार।
किते न औगुन जग करै वै नै चढ़ती बार॥"

बहुज्ञता का प्रदर्शन —

बिहारी को अनेक विषयों की अच्छी जानकारी थी। उन्होंने अपने दोहों में ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, इतिहास-पुराण, लोकज्ञान आदि विषयों का प्रयोग किया है। ज्योतिष ज्ञान की जानकारी उनके इस दोहे में है —

"मंगल बिन्दु सुरंग, मुख ससि केसर आड़ गुरु।
इक नारी लहि संग, रसमय किय लोचन जगत॥"

इस दोहा में बिहारी ने वर्षा योग को नायिका पर घटित दिखाया है। नायिका चन्द्रमुखी है, उसके मस्तक पर लगी लाल बिन्दी ही मंगल ग्रह और केसर का पीला टीका (तिलक) ही वृहस्पति है। इस प्रकार एक ही स्त्री (नारी) ने इन तीनों ग्रहों को एक साथ पाकर प्रेम रूपी जल की वर्षा का विधान नेत्र रूपी संसार में कर दिया है।

भाषा की शक्ति —

बिहारी ने कम शब्दों में

अधिक भाव व्यक्त करने के लिए अपने काव्य में भाषा की समास शक्ति का प्रयोग किया है। बड़े-बड़े प्रसंगों को भी वे दोहा के दो पंक्तियों में समाहित कर दिये हैं। गुरुजनों की भरी सभा में नायक-नायिका किस प्रकार आँखों के संकेत से ही वार्तालाप कर लेते हैं, इसका उदाहरण निम्न दोहे में देखा जा सकता है —

"कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननु ही सब बात॥"

वस्तुतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि बिहारी उच्चकोटि के कवि हैं। वे एक सफल मुक्तककार एवं श्रृंगार के रससिद्ध तथा रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं। बिहारी का अनुभव पक्ष एवं कला पक्ष अत्यन्त सशक्त है।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास